त्रयाणां धूर्तानां

कस्मिंश्चदधिष्ठाने मित्रशर्मा नाम ब्राह्मणः प्रतिवसति स्म । स कदाचिन्माघमासे पशुप्रार्थनाय ग्रामान्तरं गतः । तत्र तेन कश्चिद्यजमानो याचितः । “भो यजमान आगामिन्याममावास्यायां यक्ष्यामि यज्ञं तद्देहि मे पशुमेकम्” । अथ तेन तस्य शास्त्रोक्तः पीवरतनुः पशुः प्रदत्तः । सोऽपि तं समर्थमितश्चेतश्च गच्छन्तमवलोक्य स्कन्धे कृत्वा सत्वरं स्वपुराभिमुखः प्रतस्थे ।

अथ तस्य गच्छतो मार्गे त्रयो धूर्ताः संमुखा बभूवुः । तैश्च तादृशां पीवरतनुं पशुं स्कन्धमारूढमवलोक्य मितोऽभिहितम् । “अहो अस्य पशोर्भक्षणादद्यतनो हिमपातो व्यर्थतां नीयते । तदेनं वञ्चयित्वा पशुमादाय शीतत्राणं कुर्मः” ।

अथ तेषामेकतमो वेषपरिवर्तनं विधाय संमुखो भूत्वा तमूचे । “भो भोः किमेवं जनत्रिरूद्धं हास्यकार्यमनुष्ठीयते यदेष सारमेयोऽपिवित्रः स्कन्धारूढो नीयते” । ततश्च तेन कोपाभिभूतेनाभिहितमहो “किमन्धो भवान्यत्पषुं सारमेयं प्रतिपादयसि” । सोऽब्रवीद्ब्रःमन् कोपस्त्वया न कार्यो यथेच्छं गम्यतामिति ।

अथ यावत्किम्चिदध्वान्तरं गच्छति तावद्द्वितीयो धूर्तः संमुखः समुपेत्य तमुवाच । “भो ब्रह्मन् कष्टं कष्टं यध्यापि वल्लभोऽयं ते सारमेयस्तथापि स्कन्धमारोपयितुं न युज्यते” । अथासौ सकोपमिदमाह । “भोः किमन्धो भवान्यत्पशुं सारमेयं वदसि” । सोऽब्रवीद्भगवन् मा कोपं कुर्वज्ञानान्मयाभिहितम् । त्वमात्मरुचितं समाचरेति ।

अथ यावत्स्तोकं वर्त्मान्तरं गच्छति तावत्तृतीयोऽन्यवेषधारी धूर्तः संमुखः समुपेत्य तमुवाच । “भो अयुक्तमेतद्यत्त्वं सारमेयं स्कन्धाधिरूढं नयसि तत्त्यज्यतामेष यावदन्यः कश्चिन्न पश्यति” । अथसौ बहु विमृश्य तं पशुं सारमेयमेव मन्यमानो भयाद्भूमौ प्रक्षिप्य स्वगृहमुद्दिश्य पलायितः । ततस्ते त्रयो मिलित्वा तं पशुमादाय प्रतस्थिरे ।

-समाप्ति

ईश्वर जो करता है अच्छा करता है

एक बार एक राजा अपने एक दरबारी के साथ शिकार के लिए जंगल में गया हुआ था । शिकार करते हुए राजा के हाथ की अंगुली कट गयी । साथी दरबारी ने सहानुभूति व्यक्त करने की बजाए कहा कि ‘ईश्वर जो करता है अच्छा करता है इसमें कोई भला होगा’ । यः सुनकर राजा क्रोधित हो गया और दरबारी को तुरंत लौट जाने का आदेश दे दिया ।

अब राजा अकेले ही जंगल में आगे चल दिया और अपने राज्य की सीमा से आगे घने जंगलोम मेम जा पहुँचा । वहां कुछ

आदिवासी नर बलि देने की तैयारी कर रहे थे । इसके लिए उन्हे एक मनुष्य की आवश्यकता थी । राजा को देखते ही आदिवासियों ने नरबलि हेतु राजा को पकड लिया । जब वे राजा की बलि चढाने लगे, तब उनकी नजर राजा की कटी हुई अंगुली पर गई । क्योंकि बलि के लिए सर्वांग की अवश्यकता होती है इसलिए उन्होंने राजा को छोड दिया ।

राजा प्रसन्नमन से राजमहल लौटा । फिर निकाले हुए साथी राज दरबारी को बुलाया और उससे माफी मॉंगी । राजा ने दरबारी से पूछा कि 'मेरी अंगुली कट जाने के कारण तो मैं बच गया परन्तु तुम्हारे साथ मैंने जो बुरा व्यवहार किया उससे तुम्हें क्या लाभ हुआ ?' राजदरबारी ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया, 'महाराज, यदि आप मुझे लौटने के लिए नहीं कहते तो मैं वहां आप के साथ होता और क्योंकि मैं सर्वांग था इसलिए मेरी बलि दे दी जाती' ।

यह सुनकर राजा भी दरबारी के कथन से सहमत हो गया और प्रसन्न होकर दरबारी को इनाम दिया ।

जयोऽस्तु ते

जयोऽस्तु ते! जयोऽस्तु ते!
श्री महन्मंगले शिवास्पदे शुभदे
स्वतंत्रते भगवती त्वामहम् यशोयुतां वंदे!
गालावरच्या कुसुमी किंवा कुसुमांच्या गाली
स्वतंत्रते भगवती तूच जी विलसतसे लाली
तू सूर्याचे तेज उदधीचे गांभीर्यही तूची
स्वतंत्रते भगवती अन्यथा ग्रहण नष्ट तेची
वंदे त्वामहम् यशोयुतां वंदे!

मोक्ष-मुक्ती ही तुझीच रूपे तूलाच वेदांती
स्वतंत्रते भगवती योगिजन परब्रह्म वदती
जे जे उत्तम उदात्त उन्नत महन्मधुर ते ते
स्वतंत्रते भगवती सर्व तव सहचारी होते
वंदे त्वामहम् यशोयुतां वंदे!

-विनायक दामोदर सावरकर